Quest Journals
Journal of Hindi, Political Science and Home Science
Volume 16 ~ Issue 3 (May. – June. 2026) pp: 10-13
ISSN(Online) : 2347 – 2305
www.questjournals.org

Research Paper

जयप्रकाश नारायण का सप्तक्रांति उद्घोष

डॉ. अनजीत कुमार चौधरी
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग, एम.एल.एस.एम., कॉलेज, दरभंगा

सारांश–
जयप्रकाश नारायण भारतीय राजनीति के महान समाजवादी चिंतक एवं लोकतंत्र के समर्थक थे। उनका सप्तक्रांति उद्घोष सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, नैतिक एवं मानवीय परिवर्तन का व्यापक कार्यक्रम था। उन्होंने समाज में व्याप्त असमानता, भ्रष्टाचार, शोषण एवं नैतिक पतन के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान किया। जयप्रकाश नारायण का मानना था कि वास्तविक लोकतंत्र तभी स्थापित हो सकता है जब समाज में समानता, न्याय एवं नैतिकता का विकास हो। उन्होंने राजनीति को जनसेवा एवं सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना। उनके विचारों में गांधीवाद एवं समाजवाद का समन्वय दिखाई देता है। "संपूर्ण क्रांति" का उनका आंदोलन भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय माना जाता है। उनके विचार आज भी सामाजिक न्याय, लोकतंत्र एवं नैतिक राजनीति के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

प्रस्तावना–

भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन के इतिहास में जयप्रकाश नारायण का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे केवल एक स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि समाजवादी चिंतक, लोकनायक, नैतिक राजनीति के समर्थक तथा सामाजिक परिवर्तन के प्रबल प्रवक्ता थे। भारतीय लोकतंत्र को जनआंदोलन के माध्यम से नई दिशा प्रदान करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने राजनीति को सत्ता प्राप्ति का साधन न मानकर लोककल्याण एवं सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना। जयप्रकाश नारायण का चिंतन समाजवाद, लोकतंत्र, नैतिकता तथा मानवतावाद पर आधारित था। वे सामाजिक असमानता, आर्थिक शोषण, भ्रष्टाचार, जातिवाद तथा राजनीतिक अधिनायकवाद के विरोधी थे। उनके विचारों में गांधीवाद एवं समाजवाद का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने "संपूर्ण क्रांति" का उद्घोष कर भारतीय राजनीति में नई चेतना उत्पन्न की। इसी संदर्भ में "सप्तक्रांति" की अवधारणा सामाजिक परिवर्तन के व्यापक कार्यक्रम के रूप में सामने आती है, जिसमें समाज के विभिन्न प्रकार के अन्यायों और असमानताओं के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान किया गया।

जयप्रकाश नारायण का सप्तक्रांति उद्घोष केवल राजनीतिक क्रांति का संदेश नहीं था, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक पुनर्निर्माण का भी कार्यक्रम था। उनका उद्देश्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना था जिसमें समानता, स्वतंत्रता, न्याय एवं मानवीय गरिमा सुरक्षित हो।

जयप्रकाश नारायण : जीवन परिचय–

जयप्रकाश नारायण भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के महान सेनानी, प्रखर समाजवादी चिंतक, लोकनायक तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के सशक्त समर्थक थे। भारतीय राजनीति में उनका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्रसेवा, सामाजिक न्याय, लोकतंत्र तथा जनकल्याण के लिए समर्पित कर दिया। वे ऐसे नेता थे जिन्होंने सत्ता की अपेक्षा नैतिक मूल्यों एवं जनहित को अधिक महत्व दिया।

जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर 1902 को बिहार और उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित सारण जिले के सिताबदियारा नामक गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम हरसुदयाल तथा माता का नाम फूलरानी देवी था। उनका परिवार साधारण किंतु संस्कारवान था। बचपन से ही वे गंभीर, मेधावी तथा संवेदनशील स्वभाव के थे। ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े जयप्रकाश नारायण ने भारतीय समाज की गरीबी, शोषण और असमानता को निकट से देखा, जिसने आगे चलकर उनके चिंतन को प्रभावित किया।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव में हुई। बाद में वे पटना आए और वहां से उच्च शिक्षा प्राप्त की। छात्र जीवन में ही उनमें देशभक्ति की भावना जागृत हो गई थी। उस समय भारत में राष्ट्रीय आंदोलन तेजी से फैल रहा था और युवाओं में स्वतंत्रता प्राप्ति का उत्साह बढ़ रहा था। इसी वातावरण का प्रभाव जयप्रकाश नारायण पर भी पड़ा।

वर्ष 1922 में वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अमेरिका गए। वहां उन्होंने कई विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया। आर्थिक कठिनाइयों के कारण उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ छोटे-मोटे कार्य भी करने पड़े। अमेरिका में रहते हुए उन्होंने समाजशास्त्र, राजनीति तथा अर्थशास्त्र का अध्ययन किया। इसी दौरान वे समाजवादी एवं मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हुए। उन्होंने पूंजीवादी व्यवस्था की कमियों तथा श्रमिकों की समस्याओं को निकट से समझा। अमेरिका में अध्ययन के दौरान जयप्रकाश नारायण ने श्रम, समानता और सामाजिक न्याय के महत्व को अनुभव किया। उन्होंने कारखानों एवं खेतों में कार्य करके मजदूरों के जीवन को समझा। यह अनुभव आगे चलकर उनके समाजवादी चिंतन का आधार बना।

सन् 1929 में भारत लौटने के बाद वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हो गए। वे महात्मा गांधी के विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुए। गांधीजी की सत्य, अहिंसा और जनसेवा की भावना ने उनके राजनीतिक जीवन को नई दिशा दी। साथ ही वे Jawaharlal Nehru तथा अन्य समाजवादी नेताओं के संपर्क में आए। जयप्रकाश नारायण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े, किंतु शीघ्र ही उन्होंने समाजवादी विचारधारा को अपनाया। वर्ष 1934 में उन्होंने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संगठन का उद्देश्य कांग्रेस के भीतर समाजवादी नीतियों को बढ़ावा देना था। जयप्रकाश नारायण का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक समानता भी आवश्यक है।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में जयप्रकाश नारायण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया, किंतु वे जेल से भाग निकले और भूमिगत रहकर आंदोलन का नेतृत्व करते रहे। उन्होंने युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। उनकी निर्भीकता और संघर्षशीलता ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बना दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जयप्रकाश नारायण ने सक्रिय सत्ता राजनीति से दूरी बना ली। वे मानते थे कि केवल सत्ता परिवर्तन से समाज का वास्तविक विकास संभव नहीं है। उन्होंने समाज सेवा एवं रचनात्मक कार्यों को अधिक महत्व दिया। वे विनोबा भावे के भूदान आंदोलन से जुड़े और ग्राम स्वराज, भूमि सुधार तथा सामाजिक समानता के लिए कार्य किया।

जयप्रकाश नारायण लोकतंत्र एवं नैतिक राजनीति के प्रबल समर्थक थे। वे राजनीति में बढ़ते भ्रष्टाचार, सत्ता के केंद्रीकरण तथा नैतिक पतन से अत्यंत चिंतित थे। 1970 के दशक में जब देश में भ्रष्टाचार एवं प्रशासनिक अव्यवस्था बढ़ने लगी, तब उन्होंने पुनः सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया।

वर्ष 1974 में बिहार के छात्र आंदोलन का नेतृत्व करते हुए उन्होंने "संपूर्ण क्रांति" का नारा दिया। उनका मानना था कि केवल सरकार बदलने से समाज नहीं बदलता, बल्कि शिक्षा, राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज तथा नैतिकता के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन आवश्यक है। उनका यह आंदोलन शीघ्र ही राष्ट्रीय आंदोलन बन गया। युवाओं, विद्यार्थियों तथा आम जनता ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया।

जयप्रकाश नारायण ने तत्कालीन सरकार की निरंकुश नीतियों का विरोध किया। वर्ष 1975 में देश में आपातकाल लागू किया गया, जिसके दौरान उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। किंतु उन्होंने लोकतंत्र और नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रखा। उनके नेतृत्व में लोकतंत्र की पुनर्स्थापना के लिए व्यापक जनआंदोलन हुआ।

जयप्रकाश नारायण को जनता ने "लोकनायक" की उपाधि दी, क्योंकि वे जनता की आवाज और लोकतंत्र के सच्चे रक्षक थे। वे सादगीपूर्ण जीवन जीते थे तथा नैतिक मूल्यों को अत्यधिक महत्व देते थे। उनका विश्वास था कि राजनीति का उद्देश्य जनता की सेवा और समाज का कल्याण होना चाहिए।

उनका चिंतन समाजवाद, लोकतंत्र, नैतिकता तथा मानवतावाद पर आधारित था। वे जातिवाद, आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार एवं शोषण के विरोधी थे। उन्होंने समाज में समानता, स्वतंत्रता एवं न्याय की स्थापना का समर्थन किया।

8 अक्टूबर 1979 को उनका निधन हो गया। उनके निधन से भारतीय राजनीति ने एक महान नैतिक नेता को खो दिया। आज भी जयप्रकाश नारायण के विचार लोकतंत्र, सामाजिक न्याय तथा नैतिक राजनीति के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। भारतीय इतिहास में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

सप्तक्रांति की अवधारणा–

सप्तक्रांति का विचार मूलतः सामाजिक परिवर्तन के सात प्रमुख आयामों से संबंधित है। यह अवधारणा समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की असमानताओं एवं अन्यायों को समाप्त करने का संदेश देती है। जयप्रकाश नारायण का मानना था कि केवल राजनीतिक परिवर्तन पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन भी आवश्यक है। सप्तक्रांति का उद्देश्य मानव जीवन को शोषणमुक्त एवं न्यायपूर्ण बनाना था। यह विचार लोकतंत्र, समाजवाद तथा नैतिक मूल्यों पर आधारित था।

सप्तक्रांति के प्रमुख आयाम–

1. सामाजिक समानता की क्रांति–

जयप्रकाश नारायण जाति-व्यवस्था एवं सामाजिक भेदभाव के विरोधी थे। उनका मानना था कि भारतीय समाज में जातिवाद सामाजिक एकता एवं लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ी बाधा है। वे दलितों, पिछड़ों एवं वंचित वर्गों को समान अधिकार देने के पक्षधर थे। उन्होंने सामाजिक न्याय को लोकतंत्र की आधारशिला माना। उनके अनुसार जब तक समाज में समानता स्थापित नहीं होगी, तब तक वास्तविक लोकतंत्र संभव नहीं है।

2. आर्थिक समानता की क्रांति–

जयप्रकाश नारायण पूंजीवादी शोषण एवं आर्थिक विषमता के विरोधी थे। उनका मानना था कि समाज में धन एवं संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण होना चाहिए। वे किसानों, मजदूरों एवं गरीब वर्गों के हितों के समर्थक थे। उनके अनुसार आर्थिक असमानता लोकतंत्र को कमजोर करती है। इसलिए समाजवादी आर्थिक व्यवस्था की स्थापना आवश्यक है।

3. राजनीतिक क्रांति–

जयप्रकाश नारायण भ्रष्टाचार, सत्ता के केंद्रीकरण तथा तानाशाही प्रवृत्तियों के विरोधी थे। उन्होंने राजनीति में नैतिकता एवं जनभागीदारी पर बल दिया। 1974 के बिहार आंदोलन में उन्होंने युवाओं एवं विद्यार्थियों को भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित किया। उनका मानना था कि जनता ही लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति है।

4. सांस्कृतिक क्रांति–

जयप्रकाश नारायण भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों के समर्थक थे। उनका विचार था कि समाज में नैतिक पतन एवं उपभोक्तावाद के कारण मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। वे भारतीय संस्कृति में निहित सत्य, अहिंसा एवं सहिष्णुता के मूल्यों को पुनर्स्थापित करना चाहते थे।

5. शैक्षिक क्रांति–

जयप्रकाश नारायण शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख माध्यम मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण एवं सामाजिक चेतना विकसित करना होना चाहिए। वे ऐसी शिक्षा व्यवस्था के पक्षधर थे जो समाज के सभी वर्गों के लिए समान रूप से उपलब्ध हो।

6. नैतिक क्रांति–

जयप्रकाश नारायण राजनीति एवं समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना के समर्थक थे। वे सत्य, अहिंसा, ईमानदारी एवं सेवा को सार्वजनिक जीवन का आधार मानते थे। उनका विश्वास था कि बिना नैतिकता के लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता। इसलिए उन्होंने राजनीतिक शुचिता एवं जनसेवा पर विशेष बल दिया।

7. आध्यात्मिक एवं मानवीय क्रांति–

जयप्रकाश नारायण मानवतावाद के समर्थक थे। उनका मानना था कि सभी मनुष्यों में समान आत्मिक मूल्य होते हैं। वे हिंसा, घृणा एवं द्वेष के विरोधी थे। उनका उद्देश्य ऐसा समाज बनाना था जिसमें प्रेम, सहयोग एवं मानवीय संवेदना का विकास हो।

सप्तक्रांति और संपूर्ण क्रांति–

जयप्रकाश नारायण की "संपूर्ण क्रांति" की अवधारणा सप्तक्रांति के विभिन्न आयामों का समन्वित रूप थी। उनका मानना था कि केवल सरकार बदलने से समाज नहीं बदलता, बल्कि व्यक्ति, समाज और व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन आवश्यक है। संपूर्ण क्रांति का उद्देश्य राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन लाना था। यह आंदोलन लोकतंत्र की रक्षा एवं जनशक्ति के सशक्तिकरण का प्रतीक बना।

गांधीवाद एवं समाजवाद का समन्वय–

जयप्रकाश नारायण के चिंतन में महात्मा गांधी तथा समाजवादी विचारधारा का समन्वय दिखाई देता है। गांधी से उन्होंने अहिंसा, सत्य एवं ग्राम स्वराज की भावना ग्रहण की, जबकि समाजवाद से आर्थिक समानता एवं शोषण-विरोध का दृष्टिकोण प्राप्त किया। वे हिंसक क्रांति के विरोधी थे तथा शांतिपूर्ण जनआंदोलन को परिवर्तन का माध्यम मानते थे।

सप्तक्रांति उद्घोष की प्रासंगिकता–

आज के भारत में जयप्रकाश नारायण का सप्तक्रांति उद्घोष अत्यंत प्रासंगिक है। भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, बेरोजगारी, राजनीतिक अवसरवाद एवं नैतिक पतन जैसी समस्याएं आज भी विद्यमान हैं। युवा पीढ़ी में सामाजिक चेतना एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास के लिए उनके विचार प्रेरणास्रोत हैं। वर्तमान समय में राजनीति में बढ़ते भ्रष्टाचार एवं सत्ता-केंद्रित प्रवृत्तियों के बीच जयप्रकाश नारायण का लोकतांत्रिक एवं नैतिक दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जयप्रकाश नारायण का सप्तक्रांति उद्घोष भारतीय समाज एवं राजनीति के लिए एक व्यापक परिवर्तनकारी दृष्टि प्रस्तुत करता है। उन्होंने केवल राजनीतिक परिवर्तन की बात नहीं की, बल्कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना पर बल दिया। उनका चिंतन लोकतंत्र, समाजवाद, समानता तथा मानवतावाद पर आधारित था। उन्होंने सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता, राजनीतिक शुचिता तथा नैतिकता को लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार माना। जयप्रकाश नारायण ने जनशक्ति की महत्ता को स्थापित किया तथा यह सिद्ध किया कि शांतिपूर्ण जनआंदोलन के माध्यम से भी सामाजिक परिवर्तन संभव है। उनका "संपूर्ण क्रांति" आंदोलन भारतीय लोकतंत्र की रक्षा का प्रतीक बन गया। आज जब समाज भ्रष्टाचार, असमानता एवं नैतिक संकट जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब जयप्रकाश नारायण का सप्तक्रांति उद्घोष नई दिशा प्रदान करता है। उनके विचार भारतीय लोकतंत्र एवं सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए सदैव प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

संदर्भ सूची–

1. नारायण, जयप्रकाश — संपूर्ण क्रांति के दस्तावेज।
2. नारायण, जयप्रकाश — समाजवाद से सर्वोदय तक।
3. नारायण, जयप्रकाश — भारतीय राजनीति और लोकतंत्र।
4. शर्मा, रामविलास — जयप्रकाश नारायण : व्यक्तित्व और विचार।
5. अवस्थी, ए.पी. — भारतीय राजनीतिक चिंतक।
6. सिंह, रामवृक्ष — भारतीय समाजवादी आंदोलन।